मैंने ईश्वर को देखा है

मां यो दृष्टवान् स पितरं दृष्टवान्

(जिसने मुझे देखा है उसने पिता परमेश्वर को देखा है । यूहन्ना 14:9 बाईबिल)

शिष्य थॉमसन

आचार्य यीशुदास जी सुबह उठे, गौशाले की खबर ली, साफ सफाई की, चारा डाला उसके पश्चात् स्नान करके अपना थैला ले साइकिल पर सीधे सेवक ग्राम की तरफ चले गये आज वहाँ भक्ति होगी। पास के गाँव से लोग ईषभक्ति के लिये एकत्रित हो गये थे।

आमवृक्ष की छाया में मानों एक मनभावना उपासना ग्रह बन गया था। भजन गाने के पश्चात् बाबूलाल जी ने आचानक एक सवाल पूछ लिया बोले आचार्य जी, क्या हम लोग ईश्वर की भक्ति उचित रीती से कर रहे हैं? क्या ईश्वर की महानता या महिमा हम सही मायनों में देख रहे हैं?

सही ईश्वर की पहचान

न कोई चमक है, न रंगों की सजावट, न झंडे, न कीमती सोने-चाँदी का श्रंगार या आभूषण, और न ही कोई ईश्वर का आकार। क्या इस तरह की आराधना-भक्ति से ईश्वर की महिमा दिखाई जा सकती है? आचार्य यीशु दास जी यह सुनकर कुछ क्षण के लिये मौन हो गये, तब वे सबको संबोधित करके बोले आज बाबूलाल जी ने जो विषय उठाया है, तो हम उस पर विचार करेंगे।

आज ईश्वरीय दिव्य महिमा को लोग किस रूप से देखते हैं। चारों तरफ जरा नज़र घुमा कर देखें। उपासना धार्मिकस्थल चमकते हैं। रंगीन हैं, बिजली की बत्तियाँ जगमगाती हैं। सोना चाँदी के आभूषण का श्रंगार है। और दान दक्षिणा की पेटियाँ भर रही हैं। ईश्वर की महिमा चमक दमक और श्रंगार से नापी जा रही है। लेकिन इसके विपरीत एक तस्वीर है यहाँ हम जीवित परमेश्वर की भक्ति सारी सादगी से आम वृक्ष की छाया में कर रहे हैं। बाबूलाल जी बाइबिल में लिखा है, परमेश्वर को किसी ने कभी नहीं देखा, पर उसके पुत्र प्रभु-यीशु ने परमेश्वर को हम पर प्रगट किया (यूहन्ना 1:18 बाइबिल)। प्रभु-यीशु ने कहा जिसने मुझे देखा हे, उसने स्वर्ग के पिता परमेश्वर को देखा है। (यूहन्ना 14:9 बाइबिल) आचार्य जी ने कहा आखिर धर्मस्थल में मनुष्य जाता क्यों है? सबिता जी ने झट जवाब दिया, हम ईश्वर को खुश करने जाते हैं। ताकि वो हमारे दु:ख दर्द दूर करें हमें संकट मोचन दें।

गलत विचारधारा

इस पर आचार्य यीशु दास जी गंभीर हो गये, उन्होंने कहा सच तो ये हैं, कि मनुष्य परमेश्वर को नौकरी पर लगाना चाहता है, जैसी विचारधारा हमारी होती है, वैसे ही ईश्वर का निर्माण हम करते हैं। सनातन, पवित्र और सर्वशक्तिमान परमेश्वर को आकार देने लगते हैं। यदि हम उसे अपना अंगरक्षक बनाना चाहते हैं तो हम उस ईश्वर के हाथ खतरनाक हथियार दे देते हैं। और यदि हम धन-दौलत चाहते हैं, तो उसके सामने पैसे, सोना, चाँदी और कीमती वस्तुओं का चढ़ावा करते हैं। और यदि किसी से दुश्मनी निभानी है, तो उसके बुरे के लिए प्रेत और भूतों की भक्ति करते हैं। साधना करते हैं, बली व खून का चढ़ावा करते हैं।

परमेश्वर को धन-दौलत से और चढ़ावे से खुश करना या खरीदना संभव नहीं है। जीवित और सत्य परमेश्वर जिसने सारी सृष्टि की रचना की है, वो हमारे सोने, चाँदी और पैसे से न खरीदा जा सकता है, न खुश हो सकता है। ये सब शैतान का एक महाझूठ है।

ईश्वर आप से कुछ नहीं चाहता है

आत्मा से भक्ति का अर्थ ही यह है, कि भौतिक वस्तुओं का प्रयोजन आराधना-भक्ति में नहीं है। आप लोग खुद ही जानते हैं, कि ईश्वर के नाम पर आजकल कितनी लूटमार है। पीड़ित लोगों की सारी कमाई, ओझा, सोखा के तंत्र-मंत्र में फुँक जाती है।

मैं आपको आज उस जीवित परमेश्वर के बारे में बाताता हूँ जो न आपका चढ़ावा चाहता है, न आपका पैसा और न आपके कीमती आभूषण। जब ईष पुत्र प्रभुयीशु मनुष्य रूप धारण कर जगत में आये तो सचमुच परमेश्वर की महान् महिमा उनमें दिखाई दी। और उसी की भक्ति आज हम सारी सादगी से हम आम वृक्ष की छाया में बैठकर कर रहे हैं। प्रभु यीशु की आराधना कीमती भौतिक वस्तुओं से नहीं पर आत्मा और सत्य से होती है।

ईश्वर की महिमा दिखाई दी

आचार्य यीशु दास जी बोले मैं भी ईश्वर से अनजान था न मेरे पास सत्य था न जीवन, तब एक दिन प्रभु-यीशु से मेरा परिचय हुआ। बाइबिल में लिखा है, ''परमेश्वर पुत्र ने मानव रूप धारण किया और हमारे बीच डेरा किया, और हमने उस की ऐसी महिमा देखी जैसे स्वयं परमेश्वर के पुत्र की महिमा (यूहन्ना 1:14)।

तो मैंने भी देखा, एक देहात में गरीब परिवार में जन्में एक साधारण व्यक्ति को सच तो यही था, पर उसकी सादगी के अंदर जीवित परमेश्वर की सामर्थ, अधिकार व महिमा छिपी थी वो सच्चे भक्त और ईश्वर खोजी को परमात्मा की सहायता से दिखाई देती थी।

प्रभु यीशु में मैंने ईश्वर देखा

- मैंने उसमें ईश्वरीय प्रेम देखा, मैंने उसे भूखों को भोजन देते हुए देखा, मैंने कोड़ियों को छूकर स्वस्थ्य करते देखा मैंने उसे अंधों की आँखें खोलते हुए देखा। भूतप्रतों को आदेश देकर लोगों को छुटकारा देते देखा।
- हाँ मैंने प्रभु यीशु में ईश्वरनीय महिमा देखी है। सचमुच वे परमेश्वर के पुत्र हैं। मैंने उन्हें अपने शिष्यों के पाँव धोते देखा। नम्रता दीनता की यह सबसे बड़ी मिसाल थी।
- हाँ मैंने प्रभु यीशु में ईश्वर देखा। उन्हें पानी पर चलते देखा आँधी को शांत रहने का आदेश देते सुना और समुदंर की भीषण लहरों का थामते देखा।
- हाँ मैंने प्रभु यीशु को मुक्तिदाता के रूप में देखा है, जब वो सारे संसार के लोगों के पाप का दंड स्वयं उठाते हुए, काठ के उस क्रूस पर कीलों से लटके नज़र आते हैं।

हाँ मैं घोषणा कर सकता हूँ कि प्रभुयीशु ही परमेश्वर है। मुक्तिदाता हैं, जीवित हैं और हमसे प्रेम करते हैं।

मुक्ति फिर भक्ति

मृत्यु के उपरांत वे तीसरे दिन जी उठे, और लोगों के देखते वे स्वर्ग की ओर उठ गये। हाँ आज वे जीवित हैं। और अपने भक्तों की सादगी में सत्य और आत्मा से भक्ति स्वीकार करते हैं।

किरपाल भाई बोले क्या भक्ति से मुक्ति मिल सकती है। आचार्य जी बोले पहले मुक्ति फिर भक्ति, क्या सोचते हो, मुँह में भक्ति और मन में झूठ, द्वेष, गर्व, क्रोध, धोखा, लालच, ईर्ष्या और वासना ये तो परमेश्वर की स्वीकार्य नहीं होगा।

हर मनुष्य पापी है, और पाप का परिहार या पापमोचन पहले मिलना होगा, जिसे हम मोक्ष या मुक्ति भी कहते हैं। इसका उपाय मनुष्य के पास नहीं है, धर्म अनेक हैं, पर मुक्तिदाता एक है वो इसलिये कि ये मुक्तिदाता भक्तों की सेवा लेने नहीं आये पर सेवा करने आये, जैसे एक मरीज का इलाज डॉक्टर करता है न की मरीज से अपनी सेवा लेता है। पाप का इलाज परमेश्वर करता है। वे सोने के सिहांसन पर बैठने नहीं आये, पर दु:खी निराश, बीमार, लाचार और निर्धन के घर आये हैं, हमारे सवेक बनकर आये हैं। हमारी पापमोचन और मुक्ति प्राप्त करने के बाद सत्य से भक्ति होती है।

ईश्वर हथियार और हिंसा

आखिर में दया प्रसाद जी ने आचार्य जी से पूछा कि ये बतायें कि मनुष्य की कल्पना में ईश्वर, शक्ति का प्रतिरूप होता है। इसलिये ईश्वर के साथ हथियारों का बल जुड़ा रहता है, लेकिन हम प्रभु यीशु को जब देखते हैं, तो उसे

क्रूस पर लटके हुए, लहूलुहान और घायल पीड़ित पाते हैं। क्या ये मुक्तिदाता और जीवित परमेश्वर की तस्वीर है या हारे हुए एक बेबस इन्सान की,

आचार्य यीशु दास जी बोले, क्रूस की तस्वीकर प्रभु यीशु का अंत नहीं है, ये हमारे पापों का पापदंड है, जो वो हमारे बदले उठा रहे हैं। हमारा कर्जा प्रभु यीशु भर रहे हैं। उसके बाद वे मृत्यु को हराकर जीवित होते हैं। और दुनिया के सामने उनका स्वर्गारोहण होता है। ये बेबस ईश्वर का चित्र नहीं है। ये एक प्रेमी पिता परमेश्वर की विजय है। बाइबिल का एक वचन इस प्रकार है ''प्रभु यीशु परमेश्वर की महिमा का प्रकाश और उसके ईश्वरत्व की छाप है, और सर्व ब्रह्मांड को अपने वचन की शक्ति से संभालते हैं, प्रभु यीशु पापों को धोकर स्वर्ग में परमेश्वर के दाहिने सिंहासन पर विराजमान हैं। आज प्रभु यीशु क्रूस पर नहीं सर्वशक्तिमान के सिहांसन पर विराजमान हैं।

हथियार और हिंसा तो पाप के साधन हैं जो मनुष्य के पास हैं। प्रभु यीशु निशस्त्र अवस्था में क्रूस पर चढ़ते हैं अपना पवित्र खून पाप निवारण हेतु बलिदान चढ़ाते हैं। ये प्रभु परमेश्वर का महान प्रेम हम मानव के लिये है। प्रभु यीशु क्रूस पर से अपने शत्रुओं को क्षमा करते हैं। यीशु हिंसा नहीं लाये पर प्रेम और क्षमा और नवजीवन वे शक्तिहीन नहीं थे पर उन्होंने अपने अधिकार का प्रयोग नहीं किया। उनकी महिमा आज हम स्वर्ग में देख रहे हैं।

आचार्य यीशु दास जी की बातें सुनकर भक्तों का विश्वास जाग उठा, उन्होंने अनुरोध किया कि वे भी इस प्रेम और क्षमा के जीवन को चाहते हैं। उन्हें मोक्ष कैसे मिलेगा। आचार्य जी ने कहा पापों की क्षमा और अनंत स्वर्गीय जीवन परमेश्वर का वरदान है, जो विश्वास करता है, वो इसे मुफ्त में प्राप्त करता है।

मोक्ष प्रार्थना

आइये मेरे साथ मोक्ष प्रार्थना करिये, सबने प्रार्थना दोहराई ''हे प्रभु यीशु मैं पापी हूँ, आप ने प्रेम स्वरूप हमारा पापदंड स्वयं क्रूस के बलिदान द्वारा उठाया है। मेरा विश्वास है कि आप जीवित और सच्चे मुक्तिदाता हैं। मुझे मुक्ति दो, अपनी आत्मा दी,

जय यीशु

सत्संग शांति और आनंद से भर गया। आचार्य यीशु दास जी ने साइकिल उठाई और आश्रम की ओर चल दिये।

Please visit: for new messages and Bhakti songs
www.shishyashram.com

SHISHYASHRAM
[Registered under IndianTrust Act, 1882 Reg. No-6166
305 D/A Sheeshmahal, Shalimar Bagh, New Delhi-110 088
e-mail:jawabjawab@yahoo.com